ISSN: 2278-1439, Volume 06, Issue 01, No. 11, July-December 2016, Page No. 38-41

homepage: www.vcebhopal.ac.in

Research Pool

An International Interdisciplinary Journal

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एंव शैक्षणिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध का अध्ययन

राधिका भदौरिया
शोधार्थी
आईसेक्ट विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र.)
Email: radhikabhadouria@gmail.com

सारांशः

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एंव शैक्षणिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध का अध्ययन करना था। न्यादर्श हेतु भोपाल शहर में निवासरत 100 बच्चों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना, जिनकी उम्र 12 वर्ष से 18 वर्ष तक के बीच थी। आत्मविश्वास के मापन के लिए डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी तथा विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए उनकी 9वीं कक्षा की अंकसूची का उपयोग किया गया। निष्कर्ष में विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एंव शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

मुख्य विन्दु– आत्मविश्वास, शैक्षणिक उपलब्धि।

प्रस्तावनाः

हमारे समाज में जीवन यापन के लिए व्यक्ति में कुछ काबीलियत एवं गुण होना आवश्यक है। शिक्षा का मुख्य कार्य इन गुणों का विकास करना ही है। शिक्षा व्यक्ति के जीवन में निरन्तर चलने वाली वह प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति में ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति का विकास होता है। इन्ही गुणों के सहारे वह समाज में अपना जीवन–यापन करता है तथा सामाजिक परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करता है। शिक्षा से व्यक्ति का संपूर्ण विकास होता है। जिस प्रकार शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति का विकास करती है जिसका मापन हम व्यक्ति के समाज में सामंजस्य करते हैं उसी प्रकार किसी विद्यार्थी के शैक्षिक विकास का मापन इस बात से किया जाता है कि उस विद्यार्थी ने अपने शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति किस सीमा तक की है अर्थात् किसी विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि का तात्पर्य उसके एक समय सीमा के अंतर्गत उसने शिक्षकों द्वारा दिए गए ज्ञान एवं कौशल को किस सीमा तक आत्मसात् किया है। इसका मापन उपलब्धि परीक्षणों द्वारा किया जाता है। आत्मविश्वास एक ऐसा कारक है जो कि सफल व असफल व्यक्ति में अंतर करता है। आत्मविश्वास का स्तर निम्न तरीकों से देखा जा सकता है। जैसे– आपका व्यवहार, आपकी भाषा, आप कैसे बोलतें है आदि। आत्म–विश्वास हमारे जीवन के

प्रत्येक पहलु में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। आत्मविश्वास एक दृष्टिकोण हैं जो व्यक्ति को सकारात्मक सोचने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे व्यक्ति अपने-आप को किसी भी परिस्थिति में ढाल सकता हैं आत्मविश्वासी व्यक्ति अपनी क्षमता पर विश्वास करता हैं और अपने जीवन पर नियंत्रण रखते हैं।

कौर, प्रभाजौत (2013) ने हाई स्कूल के विद्यार्थियों के आत्म-विश्वास पर माता-पिता तथा बच्चों के सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन किया। शोध के मुख्य उद्देश्य हाई स्कूल के विद्यार्थी (लड़के और लड़कियों) के माता-पिता तथा बच्चों के सम्बन्धों की प्रकृति का अध्ययन करना, हाई स्कूल के विद्यार्थी (लड़के/लड़कियाँ) के आत्म विश्वास स्तर को जानना तथा लड़के और लड़कियों के आत्मविश्वास तथा पारिवारिक सम्बन्धों के बीच के सहसम्बन्धों का अध्ययन करना। न्यादर्श के रूप में सिरसा जिले के स्कूलों के 9वीं कक्षा के 200 विद्यार्थियों (100 लड़के तथा 100 लड़कियों) को लिया गया। न्यादर्श पर नलनी राव द्वारा बना माता-पिता तथा बच्चों के सम्बन्ध मापनी का प्रयोग किया तथा रेखा अग्निहोत्री द्वारा बनी आत्म विश्वास अनुसूची का प्रयोग किया। परिणामों में पाया गया कि लड़कों के माता-पिता-बच्चे सम्बन्धों एवं आत्म-विश्वास में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया जबकि लड़कियों के माता-पिता-बच्चे सम्बन्धो एवं आत्मविश्वास में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

वर्मा, शालिनी (2013) ने बदलते परिवेश में छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर आत्मविश्वास के प्रभाव का अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य था उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय की छात्राओं के आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसम्बन्ध का अध्ययन करना। मुख्य परिकल्पना थी कि उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आत्मविश्वास व शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होगा। शोध के लिए भिलाई क्षेत्र से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों से कक्षा 11वीं की 300 छात्राओं को लिया गया। शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि के लिए स्वनिर्मित मापनी तथा आत्म विश्वास को मापने हेतु रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। शोध के निष्कर्षों में पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली छात्राओं के आत्मविश्वास एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, शहरी क्षेत्रों में रहने वाली छात्राओं के आत्मविश्वास एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के बीच भी सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाली छात्राओं के आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

समस्या कथनः

''उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एंव शैक्षणिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध का अध्ययन ''

उद्देश्यः

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एंव शैक्षणिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एंव शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श हेतु भोपाल शहर में निवासरत 100 बच्चों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना, जिनकी उम्र 12 वर्ष से 18 वर्ष तक के बीच थी। प्रस्तुत शोध कार्य में आत्मविश्वास के मापन के लिए डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का उपयोग किया गया है। इस मापनी में कुल 56 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए उनकी 9वीं कक्षा की अंकसूची का उपयोग किया गया।

प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्षः

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एंव शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है ।

तालिका क्र. 1

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के आत्मविश्वास एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक।

तालिका क्र. 1

चर	संख्या	मध्यमान	सारणीमान	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता 0. 05 स्तर
आत्मविश्वास	100	28.46	.088	.201	सार्थक
शैक्षणिक उपलब्धि		72.00			

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक .201 है। जबकि df 98 पर 0.05 स्तर पर सारणीमान .088 है। इस प्रकार परिकलित मान सारणीमान से अधिक है। अर्थात् .088<.201। अतः सहसम्बन्ध सार्थक है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के आत्मविश्वास एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है। इस प्रकार परिकल्पना असत्य है एवं अस्वीकृत होती है।

इसका कारण आधुनिक शिक्षा का विद्यार्थियों का सर्वांगींण विकास करना है। आजकल विद्यालयों में शिक्षा के साथ सहपाठयगामी क्रियाओं पर भी ध्यान दिया जाता है जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास वढता है जो शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

सुझावः

- विद्यार्थियों में आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए समाज की रूढ़ीवादी मानसिकता में परिवर्तन किया जाए।
- विद्यार्थियों का किसी भी परिस्थितियों में सकारात्मक दृष्टिकोण रखना ही उन्हें निम्न आत्मविश्वास एवं कुसमायोजन से बचाता है। इसलिए अभिभावकों एवं शिक्षकों को उन्हें हमेंशा सकारात्मक दृष्टिकोण रखने की शिक्षा देनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. **एस. के. गुप्ता (2008). शैक्षिक मनोविज्ञान,** प्रिन्टेज हॉल इण्डिया, नई दिल्ली।
2. **कौर प्रभाजौत (2013).** ने हाई स्कूल के विद्यार्थियों के आत्म-विश्वास पर माता-पिता तथा बच्चों के सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन, जनरल ऑफ सायॅकोलाजीकल रिर्सच।
3. **वर्मा शालिनी (2013).** शोधकर्त्री की शोध अध्ययन का विषय था- बदलते परिवेश में छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर आत्मविश्वास का प्रभाव, एशियन जनरल ऑफ सायॅकोलाजी एण्ड एजुकेशन।
4. **राजपूत जे.एस. (1988–1992). फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिर्सच,** एन. सी. ई. आर. टी.नई दिल्ली वॉल्यूम-1।
5. **राजपूत जे.एस. (1993–2000). सिक्सथ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिर्सच,** एन. सी. ई. आर. टी.,नई दिल्ली, वॉल्यूम-1।
6. **सिंह रामपाल एवं ओ. पी. शर्मा (2002), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी,** अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।